Chapter 7

bihar board class 9th hindi notes – टाल्सटॉय के घर में

लेखक – परिचय

-रामकुमार

टाल्सटॉय के घर में

प्रख्यात चित्रकार और लेखक रामकुमार का जन्म सन् 1924 ई . में शिमला में हुआ था । उनको प्रारंभिक शिक्षा शिमला में ही हुई । सेंट स्टीफेंस कॉलेज , दिल्ली से अर्थशास्त्र में उन्होंने एम . ए . किया । इसी दौरान प्रख्यात चित्रकार शैलोज मुखर्जी (शारदा उत्कील स्कूल ऑफ आर्ट) से चित्रकला की शिक्षा ली । अपनी चित्रकला को शिक्षा को विस्तार देने के लिए वे 1949 ई . में पेरिस गार और 1952 तक वहाँ रहे । उन्हें 1972 में पदमश्री सम्मान और 1985 में प्रतिष्ठित कालिदास सम्मान समेत अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं । रामकुमार की कृतियों के नाम हैं – उपन्यास – पर बने घर टूटे , देर – सबेर – कहानी संग्रह – हुस्मा बीवी तथा अन्य कहानियाँ , शिगुरों का स्वर आदि । रिपोर्ताज – यूरोप के स्केच , अनुवाद – वार्ड नं . छः , चेखव के बहुचर्चित लघु उपन्यास का हिन्दी अनुवाद अपनी छाया ' , ऑस्कर वाइल्ड के उपन्यास द पिक्चर ऑफ बोलिन का हिंदी अनुवाद ।

रामकुमार के साहित्य में निम्नवर्गीय करवाई जाँचन गहरी अनुभूति और संवेदना के साथ व्यक्त हुआ है । उनके साहित्य में भावुकता और बड़बोलेपन के लिए कोई स्थान नहीं है । वे मनुष्य और मानवीय संबंधों के छोजन और संत्रास को विश्वसनीयता के साथ पाठकों के सामने पेश करते है । रामकुमार का कथाकार यायावरी और चित्रकला से समृद्ध हुई उस भावभूमि पर मिलता है जहाँ विस्तृत अनुभव संसार है और मानवीय गरिमा को कभी न आहत करने वाली दृष्टि । प्रस्तुत पाठ ' टॉल्सटॉप के घर में उनको प्रसिद्ध पुस्तक ' यूरोप के स्केच ' से संकलित है । वे सन् 1949 ई . में चित्रकला का अध्ययन करने के लिए पेरिस गए थे । उन्हीं दिनों जय कभी मौका लगा , उन्होंने इटली , डेनमार्क , जर्मनी , पोलैंड , लंदन , चेकोस्लोवाकिया आदि देशों की यात्रा की । 1955 ई . में जय प्राग में उनके चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित हुई तब उन्हें दूसरी बार यूरोप यात्रा का अवसर मिला । इस बार उन्होंने पेरिस के अलावा सोवियत संघ , फिगलैंड , आस्ट्रिया , डंगरी आदि देशों की यात्राएँ को । ' यूरोप के स्केच ' में उन्हीं यात्राओं के रिपोर्ताज हैं । एक निरुद्देश्य यात्री की तरह घूमते हुए जो कुछ देखा , महसूस किया उन्हीं स्मृतियों को उन्होंने इसमें सजाया है । इन रिपोर्ताजों में तत्कालीन यूरोप की साहित्यिक – सांस्कृतिक जगत् की तस्वीरें है तो दूसरे विश्वयुद्ध के कारण उत्पन विखराव से उसके बाहर निकलने की कोशिशों की मार्मिक इवियां दर्ज है । " यल्सटॉय ' के घर में लेखक ने टॉल्सटाय को स्मरण करते हुए उनके जीवन की कभी न भूला पानेवाली यादों की एक झाँकी प्रस्तुत की है । लेखक के लिए टॉल्सटाय के घर की यात्रा तीर्थयात्रा की तरह है ।

कहानी का सारांश

' टॉल्सटाय के में चित्रकार और लेखक रामकुमार द्वारा रचित रिपोर्ताज है । इसमें उन्होंने विश्वप्रसिद्ध रूसी लेखक टॉल्सटाय के घर की यात्रा का भाव प्रणव वर्णन किया है । यह रिपोर्ताज उनको पुस्तक ' यूरोप के स्केच ' से संकलित है

ययलेखक मास्को से सुबह का नाश्ता करके टॉल्सटाय के घर गाड़ी चलता है । उसके साथ उसके रूसी मित्र यूरा भी है । उसे टॉल्सटाय के दो प्रसिद्ध उपन्यास ' आना कारोनिगा ' और ' युद्ध और शांति ' पढ़ने के बाद इस स्थान के प्रति आकर्षण पैदा हुआ था ।

कार तेजी से चल रही थी । उसके मित्र कार में बैठे – बैठे ही सो रहे थे पर लेखक आस – पा को चीजों को बड़े ध्यान से देखा रहा था । उसके मन में टॉल्सटाय के जन्म स्थान को उत्सुकता थी ।

टॉल्सटाय का घर गाँव के किनारे स्थित है । गांव में डेंद सी घर है । टॉल्सटाय के घर चारों तरफ बाग – बगीचे है । वहाँ की सरकार ने इस घर को संग्रहालय बना दिया है । इसे देख बहुत लोग आते हैं । लेखक वहाँ के हर चीज को

https://www.evidyarthi.in/

देखकर रोमांचित हो उठता है । वहाँ को । चौज में टाल्सटाय को स्मृति बसी है । उनके पढ़ने – लिखने के कमरे में मेज पर एक कलम से दवात्त रखी है । यह मकान का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है ।आलमारी में बहुत – सी किताबें सजी हुई थी । इसकी सादगी देखने लायक है । लेखक मकान के प्रत्येक कमर का अभिभूत होकर वर्णन करा ।
इस संग्रहालय को देखकर लेखक टॉल्सटाय के साथ – साथ उसके उपन्यासों के पात्रों से । मिलता महसूस करता है ।
दो घंटे तक मकान में घूमने के बाद वे टॉल्सटाय की समाधि पर जाते हैं । वहाँ मौन रह का नियम है । समाधि टॉल्सटाय की इच्छा के मुताबिक साधारण तरीके से बनी है । लेखक को इस यात्रा से तीर्थयात्रा सा पवित्र भाव आता है जैसा कि उसे पाँच वर्ष पूर्व फ्रांस में रोमां रोला का घर देखने पर हुआ था । यात्रा के अंत में वह अपने को उत्साहित होता महसूस होता है ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/